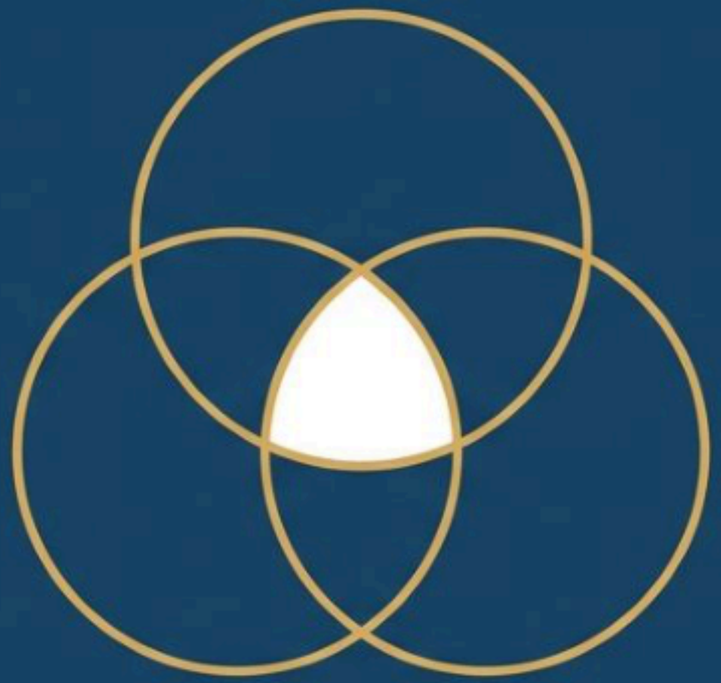

न्याय दीपिका: लक्षण, लक्षणाभास और न्यायिक मत की समीक्षा

सच्चे ज्ञान और सटीक तर्क की रूपरेखा

आचार्य अभिनव धर्मभूषण यति कृत न्याय दीपिका पर आधारित

www.JainKosh.org

तर्कशास्त्र के मूल स्तंभ

किसी भी वस्तु को सटीक रूप से परिभाषित करने के लिए तीन तत्वों को समझना आवश्यक है:

- **लक्ष्य:** वह विवक्षित वस्तु जिसे हम जानना या परिभाषित करना चाहते हैं। (उदा: गाय, जीव)
- **लक्षण:** वह विशेष चिह्न या गुण (हेतु) जो मिली हुई अनेक वस्तुओं में से हमारी वस्तु को निश्चित तौर पर अलग करे।
- **अलक्ष्य:** लक्ष्य को छोड़कर बाकी सभी वस्तुएं, जिनसे हमें लक्ष्य को अलग (व्यावृत्त) करना है। (उदाः अन्य पशु, अजीव)

सच्चा लक्षण वही है जो पूर्णतः 'लक्ष्य' पर सधे, 'अलक्ष्य' पर बिल्कुल नहीं।

www.JainKosh.org

लक्षणाभास (सदोष लक्षण) क्या है?

जो लक्षण जैसा प्रतीत तो होता है, परंतु वास्तव में दोषपूर्ण होता है, उसे 'लक्षणाभास' कहते हैं। यदि परिभाषा में एक भी दोष (परमाणु मात्र भी) हो, तो वह सत्य नहीं है।

1. अव्याप्ति

लक्षण का अधूरा पड़ जाना।
(Under-coverage)

2. अतिव्याप्ति

लक्षण का अपनी सीमा लांघ जाना।
(Over-coverage)

3. असंभव

लक्षण का पूरी तरह से वास्तविकता से दूर होना।
(Impossibility)

www.JainKosh.org

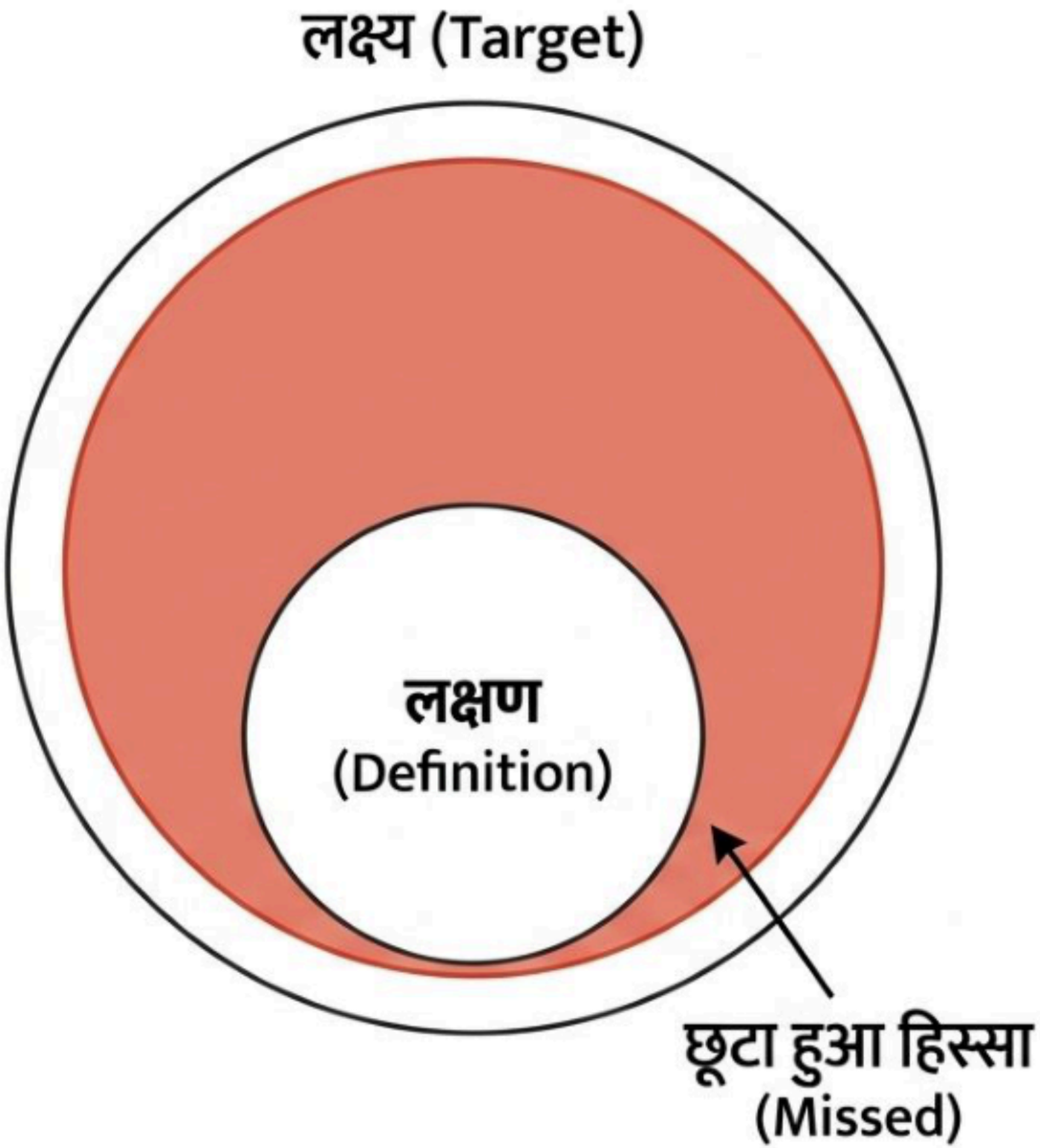

1. अव्याप्ति दोष: जब परिभाषा छोटी पड़ जाए

सिद्धांत: लक्षण का लक्ष्य के केवल एक देश (भाग) में पाया जाना।

लौकिक (Worldly)	**शास्त्र** (Scriptural)
सांवलापन या चितकबरापन (शावलेयत्व) गाय का लक्षण है। **दोष:** काली, सफेद, या जर्सी गायें इस परिभाषा से बाहर हो गईं!	क्रोध करना जीव का लक्षण है। **दोष:** शांत जीव, मुनिराज, या भगवान इस परिभाषा से बाहर हो गए!

परिणाम: सही वस्तुएं भी पहचान से बाहर हो जाती हैं।

www.JainKosh.org

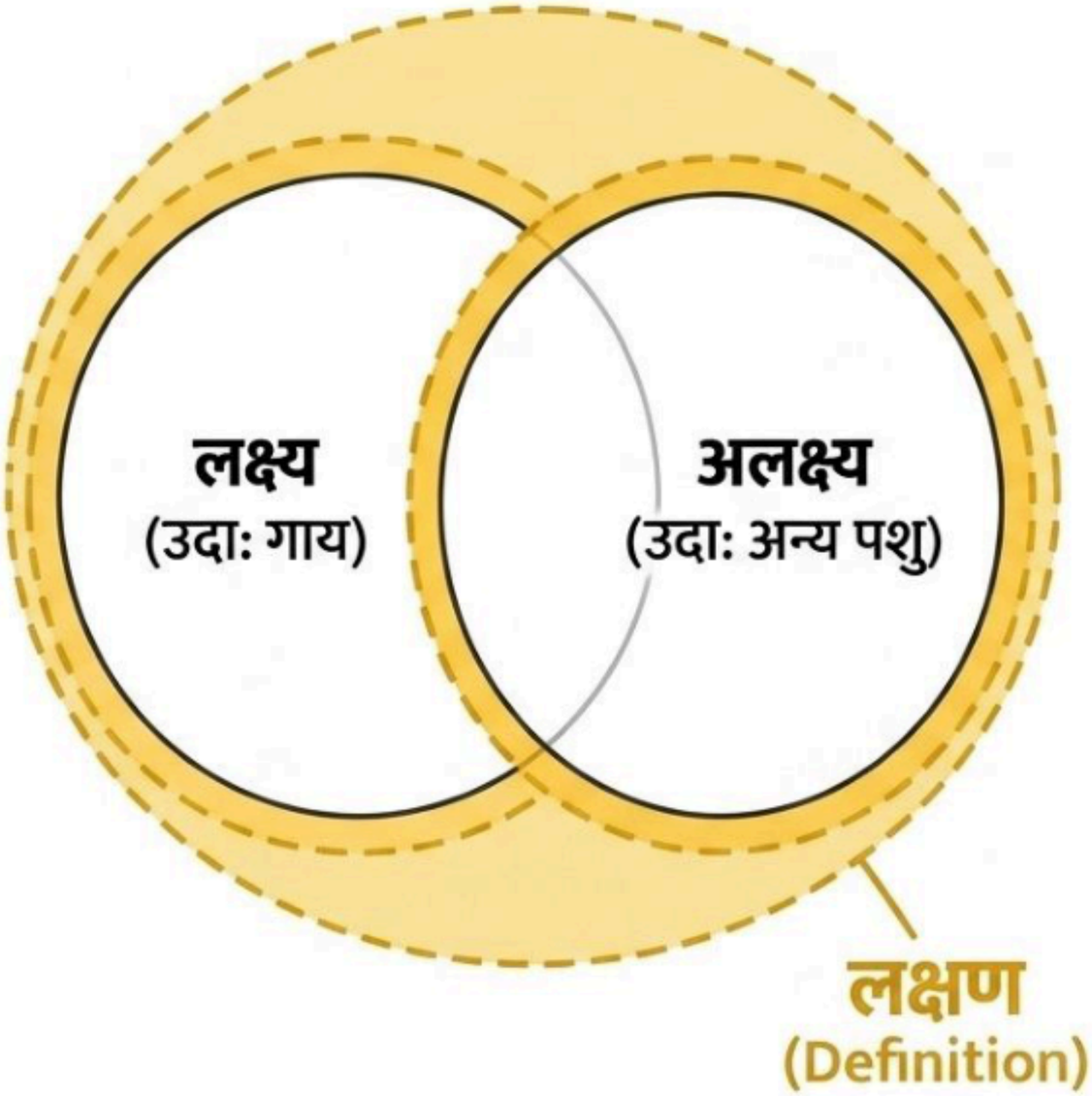

2. अतिव्याप्ति दोष: जब परिभाषा सीमा लांघ जाए

सिद्धांत: लक्षण का लक्ष्य के साथ-साथ अलक्ष्य में भी पाया जाना।

लौकिक (Worldly)	शास्त्र (Scriptural)
पशु होना (पशुत्व) गाय का लक्षण है। **दोष:** इस लक्षण में घोड़ा, हाथी, शेर भी गाय बन जाएंगे!	अमूर्तिक होना जीव का लक्षण है। **दोष:** धर्म, अधर्म, आकाश और काल द्रव्य भी अमूर्तिक हैं, अत: वे भी जीव कहलाने लगेंगे!

परिणाम: भेद-विज्ञान समाप्त हो जाता है; हम विवक्षित वस्तु को अलग नहीं कर पाते।

www.JainKosh.org

3. असंभव दोष: वास्तविकता से पूर्ण अलगाव

सिद्धांत: लक्षण का लक्ष्य में बिल्कुल भी (रंचमात्र भी) न पाया जाना।

लौकिक (Worldly)	**शास्त्र** (Scriptural)
मनुष्य वह है जिसके सींग (नर विषाण) होते हैं। **दोष:** मनुष्य के सींग कभी नहीं होते, यह पूर्णतः बाधित है।	जड़ता या अचेतनता जीव का लक्षण है। **दोष:** जीव ज्ञान-स्वभावी है, वह कभी अचेतन/जड़ नहीं हो सकता।

परिणाम: वस्तु का मूल स्वरूप ही नष्ट हो जाता है।

www.JainKosh.org

लक्षणाभास: तुलनात्मक रूपरेखा

दोष (Fallacy)	लक्ष्य में व्याप्ति (Target Coverage)	अलक्ष्य में व्याप्ति (Non-Target Coverage)	व्यावहारिक उदाहरण (Example)
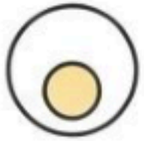 अव्याप्ति	आंशिक (एक देश)	शून्य (None)	शक्कर वह है जो चौकोर हो। (गोल शक्कर छूट गई)
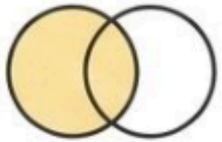 अतिव्याप्ति	पूर्ण (Full)	हाँ (Yes)	सफेदी नमक का लक्षण है। (शक्कर भी सफेद है)
असंभव	शून्य (बाधित)	लागू नहीं (N/A)	आकाश मूर्तिक है। (आकाश सदैव अमूर्तिक है)

www.JainKosh.org

व्यावहारिक सत्य: हम असंभवता में कैसे जीते हैं?

अज्ञानी (मिथ्यादृष्टि) जीव का अधिकांश जीवन अव्याप्ति या अतिव्याप्ति में नहीं,
बल्कि असंभव दोष में बीतता है।
हम वह मानते हैं, जो हमारा लक्षण है ही नहीं।

असंभव दोष
(Asambhav Dosh)

1. शरीर ही मेरी पहचान है

हमने अपना लक्षण 'चेहरा' या 'शरीर' बना रखा है। यह असंभव है, क्योंकि आत्मा रूपी लक्ष्य में जड़ शरीर का कोई अंश नहीं है।

2. धन/अनुकूलता ही सुख है

हमने सुख का लक्षण 'धन' या 'सामग्री' को बना रखा है। धन आकुलता देता है, जबकि सुख निराकुलता है।

जो अपना नहीं है, उसे अपना मानना ही संसार के दुखों का मूल कारण है।

www.JainKosh.org

दार्शनिक समीक्षा: न्यायिक (Naiyayik) मत का प्रवेश

“असाधारणधर्म वचनं लक्षणं”

(अर्थात: वस्तु के असाधारण धर्म–uncommon attribute–का कथन करना ही लक्षण है।)

सुनने में यह सूत्र बिल्कुल सही प्रतीत होता है। परंतु **आचार्य अभिनव धर्मभूषण यति इसकी गहरी परीक्षा** करते हैं।

निष्कर्ष: यह परिभाषा गलत है! न्यायिकों के इस एक सूत्र में तीनों लक्षणाभास (असंभव, अव्याप्ति, और अतिव्याप्ति) के दोष पाए जाते हैं।

आइए इस सूत्र की तार्किक चीरफाड़ करें

www.JainKosh.org

1. नैयायिक सूत्र में 'असंभव' दोष

शाब्द सामानाधिकरण्य (Co-referentiality) का अभाव

धर्म (Attribute)
उदा: चेतना

समवाय (Samvay)

~~समवाय (Samvay)~~

धर्मी (Substance)
उदा: जीव

1. न्यायिक मान्यता:

वे धर्म और धर्मी की सत्ता को सर्वथा अलग-अलग मानते हैं।

2. समस्या:

यदि 'चेतना' और 'जीव' बिल्कुल अलग हैं, तो 'चेतना' शब्द 'जीव' को कैसे इंगित करेगा? (जैसे 'ज्ञानी जीव' कहना)।

3. निष्कर्ष:

जब लक्षण का शब्द लक्ष्य को बता ही नहीं सकता, तो लक्षण लक्ष्य में रंचमात्र भी नहीं पाया गया।

अतः, इस सूत्र में असंभव दोष है।

www.JainKosh.org

2. नैयायिक सूत्र में 'अव्याप्ति' दोष

अनात्मभूत (Extrinsic) लक्षणों की उपेक्षा

जैन सिद्धांत:
लक्षण दो प्रकार के होते हैं: आत्मभूत और अनात्मभूत (जैसे 'डंडे वाला पुरुष')।

न्यायिकों की भूल: उनका 'असाधारण धर्म' का सूत्र केवल आत्मभूत लक्षणों को स्वीकार करता है। चूंकि यह परिभाषा 'अनात्मभूत' लक्षणों को कवर नहीं करती, यह एक देश तक सीमित रह जाती है।

अतः, इस सूत्र में अव्याप्ति दोष है।

www.JainKosh.org

3. नैयायिक सूत्र में 'अतिव्याप्ति' दोष

दोषपूर्ण लक्षणों को सही मान लेना

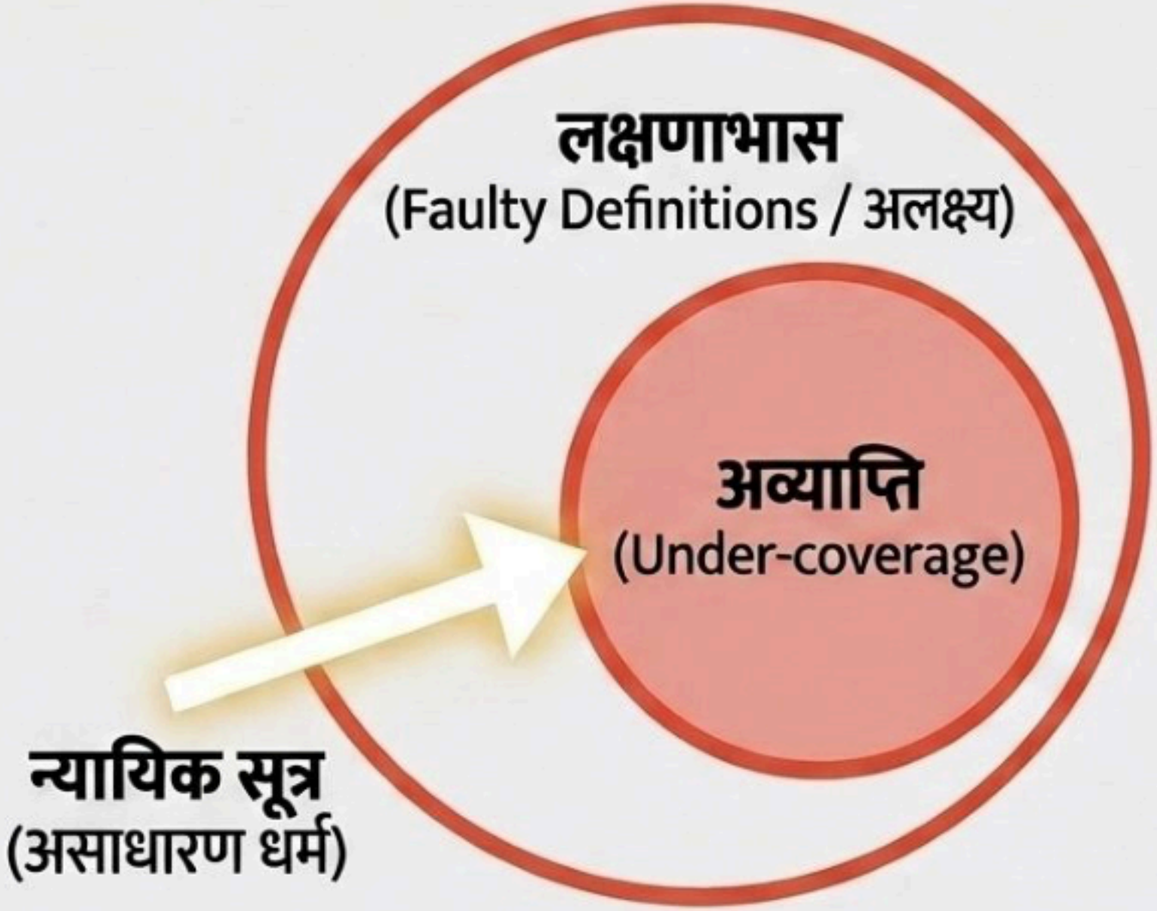

दोष का तर्क (The Trap):

- क्या हर 'असाधारण धर्म' एक सही लक्षण है? नहीं!
- **उदाहरण:** गाय का सांवलापन एक असाधारण धर्म है (यह अन्य पशुओं में नहीं होता)।
- **समस्या:** परंतु, सांवलापन गाय का सही लक्षण नहीं है, यह 'अव्याप्ति' दोष है (काली/सफेद गायें छूट जाती हैं)।
- **निष्कर्ष:** न्यायिकों का सूत्र न केवल सही लक्षणों पर लागू होता है (लक्ष्य), बल्कि वह 'अव्याप्ति' जैसे दोषपूर्ण लक्षणों (अलक्ष्य) पर भी लागू हो जाता है।

अतः, इस सूत्र में अतिव्याप्ति दोष है।

www.JainKosh.org

समाधान: जैन न्याय का अनेकांतवादी स्वरूप

तार्किक पूर्णता:

न्यायिकों के दोषों से सिद्ध होता है कि वस्तु को सर्वथा भिन्न (एकांत रूप) देखने पर पग-पग पर तार्किक दोष आते हैं।

अनेकांत की विजय:

पदार्थ द्रव्य-गुण-पर्यायात्मक है। धर्म और धर्मी कथंचित भिन्न और कथंचित अभिन्न (तादात्म्य) हैं। इसी से निर्दोष **'शाब्द सामानाधिकरण्य'** सिद्ध होता है।

सच्चा लक्षण: व्यतिकीर्ण वस्तु व्यावृत्त हेतुर्लक्षणम

(अर्थात: मिली हुई अनेक वस्तुओं में से विवक्षित वस्तु को निश्चित तौर पर अलग करने वाला हेतु ही सच्चा लक्षण है।)

www.JainKosh.org

सार और शिक्षा (Summary & Takeaways)

1. तर्क की कसौटी: कोई भी परिभाषा तभी सत्य है जब वह अव्याप्ति, अतिव्याप्ति और असंभव दोषों से पूर्णतः मुक्त हो।

2. दार्शनिक गहराई: एकांतवादी मान्यताएं (जैसे न्यायियों का "असाधारण धर्म") तार्किक कसौटी पर खरी नहीं उतरतीं। अनेकांत ही वस्तु का सत्य और निर्दोष स्वरूप है।

3. व्यावहारिक भेद-विज्ञान: लक्षण का असली उपयोग केवल बौद्धिक व्यायाम नहीं है, बल्कि शरीर, कर्म और प्रपंचों की भीड़ में से अपनी शुद्ध आत्मा को अलग पहचानना है।

जो असंभवताओं से मुक्त है, वही सत्य के निकट है।

www.JainKosh.org